यह दंतुरित मुसकान, फसल (नागार्जुन)

पाठ का परिचय

यह दंतुरित मुसकान–एक छोटे बच्चे की मुसकान को देखकर किसी भी सहृदय व्यक्ति के मन में क्या-क्या भावनाएँ उत्पन्न हो सकती हैं, इसका कवि नागार्जुन ने अपनी कविता 'यह दंतुरित मुसकान' में आलंकारिक वर्णन किया है। कवि का मानना है कि भाव-सौंदर्य में ही जीवन का वास्तविक संदेश निहित है। यह सुंदरता कठोर से कठोरतम मन को भी पिघलाकर मोम बना सकती है। बालक की इस दंतुरित मुसकान की मोहकता और मादकता उस समय और आकर्षक हो जाती है, जब उसके साथ नज़रों का बाँकपन भी समाहित हो जाता है।

फसल–फसल का नाम सुनते ही हमारे सामने लहलहाते खेतों का चित्र साकार हो उठता है। मगर हम इस बात पर विचार नहीं करते कि इस फसल को पैदा करने में किन-किन तत्त्वों का योगदान होता है, इसका यथार्थपूर्ण चित्रण कवि ने अपनी 'फसल' कविता में किया है। प्रकृति और मनुष्य के पारस्परिक सहयोग और समन्वय के द्वारा ही नवसृजन संभव है, यह संदेश भी कवि ने अपनी इस कविता में दिया है। आम बोलचाल की साधारण भाषा और उसका प्रवाह कविता को प्रभावशाली बनाने में सफल हुए हैं।

कविताओं का भावार्थ

यह दंतुरित मुसकान

1. **तुम्हारी यह दंतुरित·····रहोगे अनिमेष!**

भावार्थ–कवि छोटे बच्चे को देखकर कहता है–तुम्हारे ये नए-नए उग आए दाँतों से युक्त मुसकान इतनी मनमोहक और जीवनदायिनी है कि यह किसी मृत शरीर में भी जान डाल देगी। अर्थात् मृतक के समान भावहीन, उदास, निराश व्यक्ति भी तुम्हारी इस मुसकान को देख ले तो वह भी प्रसन्नता और आनंद से खिल (चहक) उठे। धूल-मिट्टी से सने तुम्हारे ये अंग-प्रत्यंग देखकर ऐसे लगता है, मानो कमल के फूल अपना मूलस्थान (तालाब) छोड़कर मेरी झोंपड़ी में खिल रहे हैं।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

तुम्हारा स्पर्श पाकर तुम्हारा ही प्राण, जो कठोर पत्थर के समान था, पिघलकर जल बन गया होगा। आशय यह है कि तुम इतने कोमल हो कि धूल-धूसरित तुम्हें गोद में लेने पर पाषाण-हृदय व्यक्ति भी द्रवित होकर कोमल हृदय बन जाएगा। मैं खोखले बाँस की तरह भावशून्य और बबूल के काँटे की तरह बुरे स्वभाव वाला अथवा दूसरे को पीड़ा पहुँचाने वाला हूँ, किंतु तुम्हारा स्पर्श करते ही मैं शेफालिका की लता की भाँति फूल बरसाने वाला अर्थात् कोमल एवं सुंदरभावों से युक्त हो गया हूँ और मेरे मुख से प्रसन्नता और आनंद के फूल झरने लगे हैं। कवि फिर बच्चे से ही प्रश्न करता है कि तुम मुझे पहचान नहीं पाए; इसीलिए लगातार बिना पलक झपकाए मेरी ओर एकटक दृष्टि से देख रहे हो। यदि तुम मेरे बाँस अथवा बबूल जैसे व्यक्तित्व को पहचान जाते तो यूँ मुझे एकटक दृष्टि से नहीं देखते। तुम्हारा यह भोलापन और समभाव ही तो व्यक्ति को पाषाण से पिघलाकर मोम बना सकता है।

2. थक गए हो?····· बड़ी ही छविमान!

भावार्थ–कवि बच्चे से कहता है–तुम लगातार मेरी ओर देखते हुए थक गए हो, लो मैं ही अपनी दृष्टि दूसरी ओर किए लेता हूँ। यदि मैं और तुम प्रथम बार में ही परिचित नहीं हो सके तो कोई बात नहीं। यदि तुम्हारी माँ ने तुम्हारा पहला परिचय मुझसे न कराया होता अर्थात् तुम्हारी माँ तुम्हें जन्म देकर इस संसार में न लाई होती तो हमारा और तुम्हारा यह प्रथम परिचय न हुआ होता, न मैं तुमको देख पाता और न ही जान पाता? न ही तुम्हारी नए-नए उग आए दाँतों की मुसकान मुझे दिखाई देती।

कवि कहता है कि तुम और तुम्हारी माँ दोनों ही धन्य हैं। मैं तो हमेशा से यहाँ-वहाँ घूमता रहा हूँ और चिरकाल तक घर से दूर परदेश में रहा हूँ। इस कारण इतर (पराया) हो गया। अर्थात् तुम माँ-बेटों से अलग रहकर कुछ अन्य ही व्यक्ति-सा हो गया हूँ। मैं तो यहाँ अतिथि के समान यदा-कदा अत्यल्प समय के लिए आता रहा हूँ। इसलिए इस अतिथि से तुम्हारा संपर्क भी कम ही रहा है। अपनी माँ की उँगलियों को अपने मुँह में डालकर चूसते समय तुम मधुपर्क (पंचामृत) के स्वाद जैसा आनंद प्राप्त करते रहे हो। निस्संदेह वे उँगलियाँ तुम्हें अत्यधिक प्रिय हैं; क्योंकि उनमें माँ का वात्सल्य छिपा है। आज तुम जब मुझे कनखियों से देखते हो और मेरी-तुम्हारी आँखें चार होती हैं, तब तुम्हारे नए-नए उग आए दाँतों की मुसकान वाली छवि मुझे बहुत अच्छी लगती है।

फसल

3. एक के नहीं ····· थिरकन का।

भावार्थ–कवि के अनुसार खेतों में खड़ी फसल एक के नहीं, दो के नहीं, वरन् अनेक नदियों के पानी का फल है। उसे उपजाने में करोड़ों-करोड़ हाथों की गरिमा की प्रमुख भूमिका होती है। अर्थात् फसल को खेतों में उपजाने के लिए करोड़ों-करोड़ किसान-मज़दूरों को रात-दिन जीतोड़ मेहनत करनी पड़ती है। साथ ही हज़ारों खेतों की अपनी मिट्टी का विशिष्ट गुण इसके उपजने में सहायता देता है।

कवि प्रश्न पूछता है कि फसल क्या है? फिर स्वयं ही वह उत्तर देता है कि फसल और कुछ नहीं है–नदियों के पानी का जादू है, किसानों और मज़दूरों के हाथों के स्पर्श अर्थात् परिश्रम की महिमा है, भूरी-काली-सोने जैसी मिट्टी की विशेषताएँ इसमें समाहित हैं। अनाज की सुनहरी थिरकती बालियाँ वास्तव में सूरज की किरणों का परिवर्तित और पुंजीभूत रूप तथा हवा का नर्तन हैं।

सार यह है कि इस कविता में कवि नागार्जुन ने फसल तथा इसे पैदा करने में किन-किन तत्त्वों का योगदान रहता है, यह स्पष्ट किया है।

शब्दार्थ

दंतुरित = बच्चों के नए-नए दाँत। **धूलि-धूसर गात** = धूल मिट्टी से सने अंग-प्रत्यंग। **जलजात** = कमल का फूल। **अनिमेष** = बिना पलक झपकाए लगातार देखना। **इतर** = दूसरा। **कनखी** = तिरछी निगाह से देखना। **छविमान** = सुंदर। **आँखें चार होना** = आँखें मिलाना। **छविमान** = सुंदर। **मृतक** = मरे हुए। **परस** = स्पर्श। **पाषाण** = पत्थर।

भाग-1

बहुविकल्पीय प्रश्न

काव्यांशों पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न

निर्देश– *निम्नलिखित काव्यांशों को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–*

यह दंतुरित मुसकान

(1) तुम्हारी यह दंतुरित मुसकान
मृतक में भी डाल देगी जान
धूलि-धूसर तुम्हारे ये गात·····
छोड़कर तालाब मेरी झोंपड़ी में खिल रहे जलजात
परस पाकर तुम्हारा ही प्राण,
पिघलकर जल बन गया होगा कठिन पाषाण
छू गया तुमसे कि झरने लग पड़े शेफालिका के फूल
बाँस था कि बबूल? *(CBSE 2016)*

1. कवि ने बच्चे की मुसकान को दंतुरित कहा; क्योंकि–
(क) उसका मुख छोटे-छोटे सुंदर दाँतों से सुशोभित है
(ख) उसके मुख में दाँत ही नहीं हैं
(ग) वह मुसकाते हुए दाँत छिपाता है
(घ) वह कवि के दाँत देखकर मुसकाता है।

2. कवि को बच्चे की मुसकान कैसी लगी–
(क) उपहास करने वाली
(ख) व्यंग्य से परिपूर्ण
(ग) मृतक में भी जान डालने वाली
(घ) दुःखदायी।

3. बच्चे के धूल-धूसरित अंग कैसे प्रतीत होते हैं–
(क) कमल के समान (ख) चाँद के समान
(ग) रुई के समान (घ) पत्थर के समान।

4. कवि को बच्चे के स्पर्श से क्या अनुभूति हुई–
(क) जैसे उसने पाषाण को छू लिया है
(ख) जैसे शेफालिका के फूल झरने लगे हैं
(ग) जैसे बाँस या बबूल को छू लिया है
(घ) जैसे जल का स्पर्श कर लिया है।

5. इस संपूर्ण काव्यांश में किस भाव की अभिव्यक्ति हुई है–
(क) करुण भाव की (ख) ईर्ष्या के भाव की
(ग) वात्सल्य भाव की (घ) उपेक्षा के भाव की।

उत्तर— **1.** (क) **2.** (ग) **3.** (क) **4.** (ख) **5.** (ग)।

(2) धन्य तुम, माँ भी तुम्हारी धन्य!
चिर प्रवासी मैं इतर, मैं अन्य!
इस अतिथि से प्रिय तुम्हारा क्या रहा संपर्क
उँगलियाँ माँ की कराती रही हैं मधुपर्क
देखते तुम इधर कनखी मार

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

और होतीं जब कि आँखें चार
तब तुम्हारी दंतुरित मुसकान
मुझे लगती बही ही छविमान!

1. **कवि ने किसे धन्य कहा है–**
   (क) स्वयं को (ख) बच्चे को
   (ग) बच्चे की माँ को (घ) बच्चे और माँ दोनों को।
2. **कवि ने अपने लिए किन विशेषणों का प्रयोग किया है–**
   (क) चिर प्रवासी (ख) इतर
   (ग) अन्य (घ) ये सभी।
3. **माँ बच्चे को क्या कराती रहीं–**
   (क) भोजन (ख) स्नान
   (ग) मधुपर्क (घ) शयन।
4. **'मधुपर्क' क्या है–**
   (क) वन में पाया जाने वाला एक मधुर फल
   (ख) दूध, दही, घी, शहद तथा जल के मिश्रण से बना पदार्थ
   (ग) दूध और चावल से बनाई मीठी खीर
   (घ) शहद से बना एक शीतल पेय।
5. **'आँखें चार होना' का अर्थ है–**
   (क) चार आँखें हो जाना (ख) आँखें बंद हो जाना
   (ग) आँखें मिलना (घ) आँखें फेर लेना।

उत्तर— 1. (घ) 2. (घ) 3. (ग) 4. (ख) 5. (ग)।

फसल

(3) एक के नहीं,
दो के नहीं
ढेर सारी नदियों के पानी का जादू :
एक के नहीं,
दो के नहीं
लाख-लाख कोटि-कोटि हाथों के स्पर्श की गरिमा :
एक की नहीं,
दो की नहीं
हज़ार-हज़ार खेतों की मिट्टी का गुणधर्म :

1. **'एक के नहीं, दो के नहीं' की पुनरावृत्ति के द्वारा कवि बताना चाहता है कि–**
   (क) एकता में बल है
   (ख) एक और एक दो होते हैं
   (ग) देश एक या दो का नहीं सबका है
   (घ) फसल अनेक व्यक्तियों और पदार्थों के सहयोग का परिणाम है।
2. **नदियों का पानी किसके लिए जादू का काम करता है–**
   (क) फसल के लिए (ख) बालू के लिए
   (ग) हरियाली के लिए (घ) नाव के लिए।
3. **फसल किनके हाथों के स्पर्श की गरिमा है–**
   (क) व्यापारियों के
   (ख) स्त्रियों के
   (ग) बच्चों के
   (घ) किसान और मज़दूरों के।
4. **मिट्टी का गुणधर्म क्या है–**
   (क) उसका उपजाऊपन (ख) उसका गीलापन
   (ग) उसकी कठोरता (घ) उसका भुरभुरापन।
5. **'लाख-लाख कोटि-कोटि' में अलंकार है–**
   (क) अन्योक्ति (ख) अतिशयोक्ति
   (ग) पुनरुक्ति प्रकाश (घ) यमक।

उत्तर— 1. (घ) 2. (क) 3. (घ) 4. (क) 5. (ग)।

(4) फसल क्या है?
और तो कुछ नहीं है वह
नदियों के पानी का जादू है वह
हाथों के स्पर्श की महिमा है
भूरी-काली-संदली मिट्टी का गुणधर्म है
रूपांतर है सूरज की किरणों का
सिमटा हुआ संकोच है हवा की थिरकन का! *(CBSE 2023)*

1. **पद्यांश के आधार पर लिखिए कि फसल क्या है?**
   (क) प्रकृति और मानव के श्रम का प्रतिफल
   (ख) खेतों में उगने वाला अन्न आदि
   (ग) नदियों के पानी का जादू आदि
   (घ) खेतों की मिट्टी से उपजा अन्न आदि।
2. **फ़सल उपजाने के उपजाऊ तत्त्व हैं:**
   (क) नदियों का जादू और मिट्टी
   (ख) हाथों के स्पर्श की महिमा
   (ग) सिमटा हुआ संकोच हवा की थिरकन का
   (घ) मिट्टी, पानी, सूर्य, हवा और श्रम।
3. **मिट्टी के 'गुण-धर्म' से क्या अभिप्राय है?**
   (क) मिट्टी के भिन्न-भिन्न प्रकार
   (ख) मिट्टी के भिन्न-भिन्न रंग
   (ग) मिट्टी की विशेषताएँ जो फसल उगाती हैं
   (घ) अलग-अलग प्रदेशों की मिट्टी से है।
4. **'हाथों के स्पर्श की महिमा है'–से कवि का क्या अभिप्राय है?**
   (क) हाथों का प्यार पाकर फ़सल उगती है
   (ख) किसान का परिश्रम खेती को शस्य श्यामला बनाता है
   (ग) हाथों का महान स्पर्श सर्वोत्तम होता है
   (घ) हाथों के स्पर्श की महिमा का गुणगान होता है।
5. **'रूपांतर है सूरज की किरणों का'–का भाव है–**
   (क) सिमटा हुआ संकोच किरणों में समा जाता है।
   (ख) सूरज की किरणों पर हवा थिरकती है और संकोच दूर होता है।
   (ग) सूरज की किरणें हवा पर सवार हो नीचे आती हैं।
   (घ) सूरज की ऊर्जा अन्न में परिवर्तित होकर हमें पोषित करती है।

उत्तर— 1. (क) 2. (घ) 3. (ग) 4. (ख) 5. (घ)।

पाठ पर आधारित प्रश्न

निर्देश–*निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–*

1. **किसकी मुसकान मृतक में जान डाल देती है–**
   (क) बच्चे की (ख) बूढ़े की
   (ग) पिता की (घ) माता की।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

2. **'दंतुरित मुसकान' कविता में कवि को शिशु का धूल-धूसरित शरीर प्रतीत होता है?** ***(CBSE SQP 2023-24)***

(क) स्नान करवाने योग्य

(ख) वस्त्र-आभूषण से सजाने योग्य

(ग) खिले हुए सुंदर कमल के समान

(घ) मिट्टी से सने हुए पौधे के समान।

3. **'कठिन पाषाण' का अर्थ है–**

(क) बड़ा पत्थर (ख) भारी पत्थर

(ग) कठोर हृदय वाला (घ) पाषाण युग।

4. **बच्चे के स्पर्श से किसके फूल झरने की कल्पना की गई है–**

(क) गुलाब के (ख) कमल के

(ग) चमेली के (घ) शेफालिका के।

5. **बच्चा कवि को कैसे देखता है–**

(क) डरकर (ख) कनखियों से

(ग) उपेक्षा से (घ) प्यार से।

6. **कवि ने अतिथि किसे कहा है–**

(क) स्वयं को (ख) माँ को

(ग) बच्चे को (घ) किसी आगंतुक को।

7. **'फसल' कविता हमें प्रेरणा देती है–**

(क) उपभोक्ता-संस्कृति को अपनाने की

(ख) कृषि-संस्कृति को अपनाने की

(ग) अधिक-से-अधिक फसल उगाने की

(घ) फसल को सुरक्षित रखने की।

8. **फसल सिमटा हुआ संकोच है–**

(क) हवा की थिरकन का (ख) पानी की लहरों का

(ग) सूरज की किरणों का (घ) मिट्टी के गुणधर्म का।

9. **कवि नागार्जुन पर बच्चे की मुसकान का क्या प्रभाव पड़ा–**

(क) उसकी हताशा, निराशा और उदासी दूर हो गई।

(ख) उसके शुष्क हृदय में वात्सल्य उमड़ आया।

(ग) उसे अपने पितृ-दायित्व का ज्ञान हो गया।

(घ) उपर्युक्त सभी।

10. **कवि को बच्चे की दंतुरित मुसकान के आनंद का सौभाग्य किसके माध्यम से मिला–**

(क) अपने पिता के (ख) अपनी माता के

(ग) बच्चे की माता के (घ) अपने मित्र के।

उत्तर—1. (क) **2.** (ग) **3.** (ग) **4.** (घ) **5.** (ख) **6.** (क) **7.** (ख) **8.** (क) **9.** (घ) **10.** (ग)।

भाग-2

वर्णनात्मक प्रश्न

काव्य-बोध परखने हेतु प्रश्न

निर्देश–*निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए–*

प्रश्न 1 : शिशु के धूल सने शरीर को देखकर कवि को कैसा प्रतीत हुआ?

उत्तर: शिशु के धूल से सने शरीर को देखकर कवि को ऐसा प्रतीत होता है, जैसे कमल तालाब छोड़कर उसकी झोंपड़ी में आकर खिल गए हों। कमल में स्थित सुंदरता, कोमलता और पवित्रता की बच्चे से समानता के कारण कवि को ऐसा प्रतीत हुआ।

प्रश्न 2 : कवि ने स्वयं को प्रवासी, इतर और अतिथि क्यों कहा?

उत्तर: कवि ने स्वयं को प्रवासी इसलिए कहा: क्योंकि वे घुमक्कड़ प्रवृत्ति के थे और अधिकतर घर से बाहर ही रहते थे। बच्चे ने उन्हें पहचाना नहीं था, इसलिए उन्होंने अपने आपको इतर और अतिथि कहा।

प्रश्न 3 : 'यह दंतुरित मुसकान' कविता के आधार पर बताइए कि बच्चे की मुसकान, उसका शरीर और उसका स्पर्श क्या-क्या प्रभाव पैदा करते हैं?

उत्तर: बच्चे की मुसकान मृतक में भी जान डाल देती है अर्थात् उदास, हताश और दुःखी व्यक्ति को चेतना और आनंद से भर देती है। उसके धूल-धूसरित शरीर का अवलोकन सुंदर कमल के अवलोकन का सुख देता है। उसका कोमल स्पर्श पाषाण हृदय को भी पिघला देता है।

प्रश्न 4 : 'फसल' कविता में फसल उपजाने के लिए जिन आवश्यक तत्त्वों की बात की गई है, क्या वे एक-दूसरे पर आधारित होकर ही फसल उत्पन्न करने में सहायक होते हैं? समझाकर लिखिए।

उत्तर: 'फसल' कविता में मिट्टी, जल, वायु, सूरज की किरणें, किसान की मेहनत आदि तत्त्वों की बात की गई है। इनमें से कोई भी अकेला तत्त्व फसल को उत्पन्न नहीं कर सकता। मिट्टी में उपजाऊपन है, जल सिचाई करता है, सूरज की किरणें उसे भोजन (पोषण) प्रदान करती हैं तथा वायु उसमें रस अर्थात् परिपक्वता भरती है। इस प्रकार फसल इन सब तत्त्वों के सहयोग से उत्पन्न होती है।

प्रश्न 5 : फसल को 'हाथों के स्पर्श की गरिमा' और 'महिमा' कहकर कवि क्या व्यक्त करना चाहता है?

अथवा **फसल 'हाथों के स्पर्श की गरिमा और महिमा' किस प्रकार है? विचार कीजिए।** ***(CBSE SQP 2023-24)***

उत्तर: फसल को 'हाथों के स्पर्श की गरिमा' और 'महिमा' कहकर कवि फसल उपजाने में किसान के परिश्रम के महत्त्व को व्यक्त करना चाहता है। वह बताना चाहता है कि फसल के लिए आवश्यक सभी तत्त्व: जैसे–मिट्टी, जल, वायु, सूरज की किरणें आदि उपलब्ध होने पर भी, जब तक किसान मेहनत नहीं करता, तब तक फसल उत्पन्न नहीं होती। अतः फसल जैसे महान कार्य का गौरव किसान को प्राप्त होता है।

प्रश्न 6 : "धूलि धूसर तुम्हारे ये गात ..... छोड़कर तालाब मेरी झोंपड़ी में खिल रहे जलजात" 'दंतुरित मुसकान' से ली गई उपर्युक्त पंक्तियों में प्रयुक्त बिंब को स्पष्ट कीजिए।

(CBSE 2023)

उत्तर: इन पंक्तियों में कवि ने दृश्य बिंब योजना प्रस्तुत की है। उसने शिशु के धूल-धूसरित शरीर में कमल को साकार कर दिया है। कवि कहता है कि हे शिशु! तुम्हारे धूल से सने सुंदर और कोमल अंग ऐसे लगते हैं, जैसे कमल तालाब छोड़कर मेरी झोंपड़ी में आकर खिल गए हों।

प्रश्न 7 : मिट्टी के गुण-धर्म को सुरक्षित कैसे रखा जा सकता है? 'फसल' कविता के आधार पर लिखिए। ***(CBSE 2023)***

उत्तर: मिट्टी का गुण-धर्म उसका उपजाऊपन है। भूमि को प्रदूषण से बचाकर, रासायनिक खादों और कीटनाशकों का प्रयोग न करके हम भूमि के गुण-धर्म (उपजाऊपन) को सुरक्षित रख सकते हैं।

प्रश्न 8 : 'फसल' कविता हमें उपभोक्ता-संस्कृति के दौर में कृषि-संस्कृति के निकट ले जाती है। स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: कवि ने 'फसल' के माध्यम से फसल को किसान एवं मज़दूरों के परिश्रम, मिट्टी के गुणधर्म और अनेक नदियों के जल का

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

परिणाम बताया है। आज समाज में आवश्यकता और पूर्ति के आधार पर वस्तुओं के मूल्यों और उनके क्रय-विक्रय की व्यवस्था ही महत्त्वपूर्ण है। इस बात को कोई महत्त्व नहीं दिया जाता कि उस वस्तु के निर्माण में किसकी क्या भूमिका रही है और उसे उसका प्रतिफल मिला भी है या नहीं। यही उपभोक्तावादी संस्कृति है। कृषि-संस्कृति इसके बिलकुल विपरीत है। 'फसल' कविता में कृषि-संस्कृति पर प्रकाश डालते हुए फसल उत्पादन में किसान की भूमिका को रेखांकित किया गया है। इस प्रकार फसलों के उत्पादन में कृषक के परिश्रम की महत्ता को उजागर करने के साथ उसकी कुछ पाने की संकोची प्रवृत्ति को सामने लाकर यह कविता हमें कृषि-संस्कृति के निकट ले जाती है।

प्रश्न 9 : फसल कविता में कवि ने क्या संदेश दिया है? *(CBSE 2016)*

उत्तर : 'फसल' कविता में कवि ने यह संदेश दिया है कि फसल को पैदा करने में प्रकृति (नदियों का पानी, मिट्टी का गुणधर्म, सूर्य की रोशनी और हवा) और मनुष्य के परिश्रम दोनों का ही सहयोग होता है। इनमें से किसी एक के अभाव में अच्छी फसल संभव नहीं है; अतः मनुष्य को प्रकृति के साथ समन्वय स्थापित करके ही अपने विकास की योजनाएँ बनानी चाहिए।

प्रश्न 10 : बच्चे की मुसकान और बड़े की मुसकान में क्या अंतर है?

(CBSE 2016)

उत्तर : बच्चे की मुसकान निष्कपट, सुंदर, अर्थहीन और सदैव आनंददायी होती है। बड़े की मुसकान में उपहास, व्यंग्य, ईर्ष्या तथा क्रूरता का भाव हो सकता है। बड़े की मुसकान हमेशा सुंदर तथा आनंददायी नहीं होती, बल्कि वह दूसरों के दुःख और क्रोध का कारण भी बन सकती है।

प्रश्न 11 : कवि ने शिशु की मुसकान को दंतुरित क्यों कहा? बच्चे की दंतुरित मुसकान का कवि के मन पर क्या प्रभाव पड़ा?

(CBSE 2015, 19)

उत्तर : कवि ने बच्चे की मुसकान को दंतुरित इसलिए कहा, क्योंकि उसका मुख छोटे-छोटे दाँतो से सुशोभित है। बच्चे की दंतुरित मुसकान को देखकर कवि का उदास, निराश और व्यथित मन आनंदित हो गया। उसका वैराग्य समाप्त हो गया तथा मन में वात्सल्य उमड़ आया। उसके बाँस और बबूल जैसे नीरस हृदय में शेफालिका के फूल झरने लगे तथा उसे अपने पितृ-कर्तव्य का ज्ञान हो गया।

प्रश्न 12 : 'यह दंतुरित मुसकान' को स्पष्ट करते हुए बताइए कि वह मृतक में भी जान कैसे डाल देती है? *(CBSE 2016)*

उत्तर : 'यह दंतुरित मुसकान' का तात्पर्य उस छोटे बच्चे की मुसकान से है, जिसके अभी-अभी दाँत निकले हैं। यह मुसकान इतनी मनोहर व प्रिय होती है कि मरे हुए अर्थात् जीवन से हताश और निराश व्यक्ति में भी जान डाल देती है अर्थात् बच्चे की मुसकान जीवन से पूर्णतः निराश तथा हताश व्यक्ति के मन को प्रसन्नता से भरकर उसमें जीवन के प्रति उत्साह जगाती है।

प्रश्न 13 : कवि ने शिशु और उसकी माँ को धन्य क्यों कहा है? 'यह दंतुरित मुसकान' कविता के आधार पर बताइए।

(CBSE 2015, 16)

उत्तर : कवि ने कविता में शिशु और उसकी माँ को इसलिए धन्य कहा है, क्योंकि उन दोनों के कारण कवि का जीवन सुख से भर गया है। शिशु की दंतुरित मुसकान ने उनके हताश-निराश, मृतक जैसे जीवन को आनंद, उल्लास और सरलता से परिपूर्ण कर दिया है। माँ ने शिशु से उनका परिचय कराया और उनकी अनुपस्थिति में मधुपर्क से बच्चे का अच्छी प्रकार पालन-पोषण किया। उसने माँ के साथ-साथ पिता का दायित्व भी निभाया। इसी कारण कवि शिशु और उसकी माँ दोनों को धन्यवाद दे रहा है।

प्रश्न 14 : शिशु के धूलि-धूसरित शरीर को देखकर कवि नागार्जुन ने क्या कल्पना की? *(CBSE 2020)*

उत्तर : शिशु के धूलि-धूसरित शरीर को देखकर कवि ने यह कल्पना की, मानो कमल तालाब से निकलकर उसकी झोंपड़ी में आकर खिल गए हों।

अभ्यास प्रश्न

निर्देश–*निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–*

एक के नहीं,
दो के नहीं
ढेर सारी नदियों के पानी का जादू :
एक के नहीं,
दो के नहीं
लाख-लाख कोटि-कोटि हाथों के स्पर्श की गरिमा :
एक की नहीं,
दो की नहीं
हज़ार-हज़ार खेतों की मिट्टी का गुणधर्म :

1. **'एक के नहीं, दो के नहीं' की पुनरावृत्ति के द्वारा कवि बताना चाहता है कि–**
   (क) एकता में बल है
   (ख) एक और एक दो होते हैं
   (ग) देश एक या दो का नहीं सबका है
   (घ) फसल अनेक व्यक्तियों और पदार्थों के सहयोग का परिणाम है।
2. **नदियों का पानी किसके लिए जादू का काम करता है–**
   (क) फसल के लिए (ख) बालू के लिए
   (ग) हरियाली के लिए (घ) नाव के लिए।
3. **फसल किनके हाथों के स्पर्श की गरिमा है–**
   (क) व्यापारियों के (ख) स्त्रियों के
   (ग) बच्चों के (घ) किसान और मज़दूरों के।
4. **मिट्टी का गुणधर्म क्या है–**
   (क) उसका उपजाऊपन (ख) उसका गीलापन
   (ग) उसकी कठोरता (घ) उसका भुरभुरापन।
5. **'लाख-लाख कोटि-कोटि' में अलंकार है–**
   (क) अन्योक्ति (ख) अतिशयोक्ति
   (ग) पुनरुक्ति प्रकाश (घ) यमक।

निर्देश–*निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–*

6. **'झोंपड़ी में कमल खिलने' से कवि का आशय है–**
   (क) झोंपड़ी का तालाब बन जाना
   (ख) झोंपड़ी का सुशोभित हो जाना
   (ग) गरीबी में आनंद आना
   (घ) पौधों पर फूल खिलना।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

7. **'फसल' कविता हमें प्रेरणा देती है–**
   (क) उपभोक्ता-संस्कृति को अपनाने की
   (ख) कृषि-संस्कृति को अपनाने की
   (ग) अधिक-से-अधिक फसल उगाने की
   (घ) फसल को सुरक्षित रखने की।
8. **कवि नागार्जुन पर बच्चे की मुसकान का क्या प्रभाव पड़ा–**
   (क) उसकी हताशा, निराशा और उदासी दूर हो गई।
   (ख) उसके शुष्क हृदय में वात्सल्य उमड़ आया।
   (ग) उसे अपने पितृ-दायित्व का ज्ञान हो गया।
   (घ) उपर्युक्त सभी।

निर्देश–*निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए–*

9. **'यह दंतुरित मुसकान' कविता के आधार पर बताइए कि बच्चे की मुसकान, उसका शरीर और उसका स्पर्श क्या-क्या प्रभाव पैदा करते हैं?**
10. **बच्चे की मुसकान और बड़े की मुसकान में क्या अंतर है?**
11. **नागार्जुन ने फसल को किस रूप में परिभाषित किया है?**
    ***अथवा* फसल क्या है?**
12. **शिशु के धूलि-धूसरित शरीर को देखकर कवि नागार्जुन ने क्या कल्पना की?**

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in